Methods of Excavating Town Sites

Dr. Dilip Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Ancient Indian History & Archaeology,
Patna University, Patna
Paper – CC-VIII, Sem. – II

प्राचीन नगरों के उत्खनन के प्रमुख उद्देश्य वहाँ के सांस्कृतिक क्रिया - कलाप का निर्णय तथा नगर नियोजन एवं वहाँ के निवासियों के राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक जीवन का विवरण प्रस्तुत करना है । अतैव इन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए नगर स्थलों के उत्खनन में कई विशेष बातों का ध्यान रखना अति आवश्यक है । जो नगर अवशेष का टीला है सबसे पहले उसका भली - भांति निरीक्षण करने के पश्चात टीले के ढालू भाग में उस स्थान पर उत्खनन करना प्रारंभ करना चाहिए जहाँ से शीघ्रता एवं सरलता से अवशेषों तक पहुंचा जा सके।

प्राचीन नगर विशाल हुआ करते थे अतैव नगरों से सम्बंधित पुरातात्विक अवशेष टीले के रूप में बहुत बड़े भूभाग पर फैले रहते थे तथा उनकी ऊंचाई 35, 40, 50 मीटर तक हुआ करती थी । अनेक स्थल ऐसे भी है जहाँ पर पूरा गाँव इन टीलों पर स्थित है । अतः इन स्थलों के उत्खनन के लिए एक सुनिश्चित योजनाबद्ध कार्यक्रम आवश्यक है जिससे यहाँ के सांस्कृतिक जमाव एवं नगर निवासियों के विभिन्न पहलुओं के विषय में जानकारी मिल सके । विशाल क्षेत्र का उत्खनन बड़ा ही कठिन कार्य है अतः ऐसे स्थल का चुनाव करना चाहिए जहाँ ऊपर से नीचे की ओर सबसे पहले vertical excavation करके वहाँ के अवशेषों का सांस्कृतिक जमाव जानने की कोशिश करनी चाहिए । ऐसे उत्खनन में सीढ़ीनुमा खुदाई का सहारा लिया जाता है, इस विधि में उत्खनन करते हुए जैसे - जैसे नीचे बढे वैसे - वैसे section निर्माण एवं अध्ययन के लिए एक समतल स्थल (Platform) बनाया जाता है । इसी प्रकार एक निश्चित अंतराल पर दूसरा - तीसरा, आवश्यकता अनुसार प्लेटफार्म बनाते हुए आगे बढ़ना चाहिए। अंत में सीढ़ीनुमा आकार

निर्मित हो जाता है एवं उत्खनन निदेशक नगर के उत्थान एवं पतन का चित्र प्रस्तुत करने में सुविधा प्राप्त होती है । इन स्थलों के उत्खनन में कई विशेष बातों पर ध्यान रखना आवश्यक है ।

<u>समतल या चौरस नगर स्थल का अध्ययन -</u>

साधारणतया पुरातन नगर स्थल या तो समतल होते है या टीलों के रूप में होते है । चूँकि अगर नगर Civil Society के विभिन्न क्रियाकलापों से सम्बंधित होते है एवं नगरों के सामान्यतः केंद्र ही मुख्य स्थल होते है । अतः नगरों के केन्द्र की खोज सर्वप्रथम करनी चाहिए । बहुदा विकसित समाज में नगरों का मत ही विभिन्न क्रियाकलापों का केन्द्र होता है एवं पूरा सामग्रियों कि दृष्टि से महत्वपूर्ण होता है । इसलिए सर्वप्रथम नगरों के मध्य भाग का उत्खनन ग्रिड प्रणाली से करनी चाहिए । इसमें चार वर्गाकार trench एक दुसरे से सटे हुए लगाना चाहिए। यदि चार trench संभव नहीं हो तो दो से भी काम चलाया जा सकता है । ऐसे उत्खनन में भी एक control pit लेकर natural soil तक पहुचना आवश्यक है।

मध्य भाग में उत्खनन कर मूल आवश्यकताओं की प्रगति के उपरांत रक्षा प्राचीर का नगर के विभिन्न सांस्कृतिक एवं निर्माण कालों से सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश करनी चाहिए । रक्षा प्राचीर नगरों के अभिन्न अंग है एवं कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण भी ये शांति एवं समृद्धि के प्रतिक एवं विकसित समाज के सूचक है । इसमें बाद में बदलाव, टूट - फूट, किले की मरम्मत, बाह्य आक्रमण एवं नागरिकों की सुरक्षा की ओर ध्यान आकर्षित करना है । इसके अतिरिक्त सुरक्षा प्राचीर का स्वंय गिरना नगर की आर्थिक अव्यवस्था पर प्रकाश डालता है ।

रक्षा प्राचीर में जहाँ अधिक प्रमाण मिलने की संभावना हो वैसे जगह कई स्थलों पर trench लगाना चाहिए । निर्माण काल के विषय में जानकारी के लिए trench का विस्तार नगर के अन्दर की ओर करना चाहिए । इसके अतिरिक्त मुख्य द्वारों, द्वारपालों की जगह उनकी निवास

व्यवस्था, सड़कों का निर्माण, लम्बाई, चौड़ाई, तोरण द्वार, राजमार्गों एवं भवनों की समकालीनता का ज्ञान आवश्यक है । अच्छा तो यह है कि नगर के मध्यवर्ती क्षेत्र से मुख्य नगर द्वार तक एवं दुर्ग से नगर द्वार तक उत्खनन किया जाये। भारत में रक्षा प्राचीर वाले कई प्राचीन नगरों जैसे उज्जैन, कौशाम्बी, पाटलिपुत्र, राजगृह, चम्पा आदि के उत्खनन का नाम लिया जा सकता है ।

<u>टीलों के अन्दर दबे नगर स्थल</u> -

प्राचीन नगरों ने अपने काफी लम्बे इतिहास के फलस्वरूप विशाल एवं उतंग टीलों का रूप धारण कर लिया है । इस प्रकार प्राचीन नगरों का सम्पूर्ण इतिहास टीलों के नीचे छिपा है । उत्खनन निदेशक प्राचीन नगरों का उत्थान एवं पतन ज्ञात करने के उद्देश्य से उत्खनन करता है एवं नगर के विकसित समाज के विभिन्न अवयवों के विषय में पूर्ण जानकारी विद्वानों के समक्ष रखना चाहता है । ये नगर बसते - उजरते रहें, टीलों के अन्दर कई कालों तक की सामग्री समाहित होती रही जिसके फलस्वरूप वर्तमान में ये बहुत बड़े आकार के दिखलाई देते है। ये ऊँचे - ऊँचे टीले अरबी भाषा में Tell, फारसी में Tep एवं तुर्की में Huyuk कहे जाते है । इन विशाल टीलों के उच्चतम स्थान पर उत्खनन करने से अंतिम काल तक के अवशेष प्राप्त हो जाते है, परन्तु प्रारंभिक काल के अवशेषों तक पहुचना कठिन होता है। उदाहारणार्थ 1902 ई. के भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के जॉन मार्शल महोदय ने गांधार महाजनपद की राजधानी पुष्कलावती का उत्खनन वर्तमान चरसद्दा नामक स्थान पर 25 - 30 मीटर ऊँचे टीले का उत्खनन करवाया। इस टीले के उच्च स्तर पर 6 मीटर गहराई तक उत्खनन किया गया। परन्तु जो भी अवशेष मिले वें मध्यकालीन या उससे पहले के थे, जबकि पुष्कलावती नगर प्राचीन नगरों में एक महत्वपूर्ण व्यापारिक संस्थान था जो लगभग 6ठी शताब्दी ई. पूर्व से लेकर 7वीं शताब्दी ई. तक आबाद रहा, क्योंकि 7वीं शताब्दी में भारत आने वाले चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इसका

उल्लेख एक आबाद नगर के रूप में किया था । सिकंदर को भी इस नगर पर अपनी प्रभुता स्थापित करने में एक माह का समय लगा था ।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के साथ ही साथ मानव के क्रिया - कलापों के कारण प्राचीन टीलों का आकार - प्रकार परिवर्तित होता रहता है। वर्षा एवं वायु के कारण हुए कटाव तथा पानी के बहाव के साथ टीले के अन्दर कि सामग्री बाहर आ जाती है । कभी - कभी तो उपरी जमाव पूर्णतः नष्ट दिखलाई देते है । ऐसे स्थलों का उत्खनन करने के लिए पहले पूर्ण रूप से उस स्थान का सर्वेक्षण कर लेना आवश्यक है । बहुधा ऐसे स्थलों का उत्खनन ढालूं जगह पर करने से आसानी होती है । व्हीलर महोदय ने पुष्कलावती के टीले के उत्खनन के लिए रक्षा प्राचीर के पूर्वी कोने पर ग्रिड (Grid) प्रणाली से उत्खनन का सुझाव दिया था जो बाद में किया भी गया ।

इस प्राचीन नगरों के टीलों का उत्खनन काफी जटिल एवं पेचीदा कार्य होता है, समय एवं संसाधनों के आधार पर उत्खननकर्ता को अपनी योजना बनानी चाहिए । जॉन मार्शल एवं मार्टीमर व्हीलर ने हड़प्पा एवं तक्षशीला के टीलों का उत्खनन करके भारतीय इतिहास में एक नवीन अध्याय जोड़ने में सफलता अर्जित की थी ।